दो बैलों की कथा

पाठ का सार / प्रतिपाद्य

यह कथा दो बैलों पर आधारित कथा है। इसमें जहाँ एक ओर एक किसान तथा उसके बैलों के बीच में व्याप्त प्रेम का वर्णन मिलता है, वहीं दूसरी ओर लेखक ने हीरा और मोती के माध्यम से मनुष्य को आज़ादी के प्रति सचेत किया है। कथा हमें बताती है कि आज़ादी ऐसा भाव है, जिसका मूल्य मनुष्य ही नहीं पशु भी समझता है। अपनी आज़ादी के लिए पशु भी एड़ी-चोटी का ज़ोर लगा देते हैं। प्रेम से तो वह किसी का भी गुलाम हो सकता है मगर ज़ोर-जबरदस्ती उसे स्वीकार नहीं है। यह कथा हमें आज़ादी को बनाए रखने और गुलामी का जीवन समाप्त करने पर ज़ोर डालती है।

हीरा की चारित्रिक / स्वभावगत विशेषताएँ

- सरल
- निडर
- साहसी
- परिश्रमी
- समझदार
- सहनशील
- ईमानदार
- सच्चा मित्र
- स्वाभिमानी
- दृढ़-निश्चयी
- अन्याय का विरोधी
- मालिक से प्रेम करने वाला

मोती की चारित्रिक / स्वभावगत विशेषताएँ

- क्रोधी
- निडर
- भावुक
- सच्चा मित्र
- स्वाभिमानी
- अन्याय का विरोधी
- मालिक से प्रेम करने वाला

पाठ का उद्देश्य

- आज़ादी के महत्व को दर्शाना।
- सहयोग की भावना के महत्व को दर्शाना।
- जीव-जन्तुओं में व्याप्त प्रेमभाव को दर्शाना।
- अन्याय को सहन करने के स्थान पर उसका विरोध करने का भाव जगाना।

<u>पाठ से मिलने वाली शिक्षाएँ / संदेश / प्रेरणा</u>

- यह पाठ हमें शिक्षा देता है कि हमें अपनी आज़ादी के प्रति सचेत रहना चाहिए।
- यह पाठ हमें संदेशा देता है कि जीव-जन्तुओं के प्रति हमें प्रेमिल स्वभाव रखना चाहिए।
- यह पाठ हमें एकता के महत्व को समझाता है और संदेश देता है कि एक होकर किसी भी मुसीबत से लड़ा जा सकता है।
- यह पाठ हमें प्रेरणा देता है कि सीधा और सहिष्णु होना आवश्यक गुण हैं। अतः हमें इन्हें नकारना नहीं चाहिए। इनका आदर करना चाहिए।